हिन्दी नव वर्ष

हे प्रकृति की सुषमा आओ,
अहलादित भाव से चेतना जगाओ।
खुशीयों से करो गान।
रुठे को दो सम्मान
बिछुड़े को करो प्रणाम
धर्म ध्यान से पाओ मान,
नववर्ष की खुशीयों का हो यशोगान।

समझो सबको कहो,
समझाना हमे आता है।
हम है प्रकृति प्रेमी,
हमे प्यार निभाना आता है।
हर पल को जीते है हम,
दर्द सहकर दुसरों को,
सुख देते है हम।
निशा के निशाचर को,
अपने दिव्य आभा से,

मूर्छित कर देते है हम।।
नववर्ष से ये आगाज है।
ये वतन तु जिन्दावाद है।
अगर तेरी सम्मान मे कोई आंच आये
तो यहां हर शक्स तैयार है।
कोई खोजे हम खोज चुके है।
त्योहारो की माला में,
सबको पिरो चुके है।।
स्वजन की भाव हमे भाता है,
दुखियों का दर्द हमे जगाता है।
जो भी मेरा है वह,
औरों का हो जाता है।
बक्त आने पर वही,
हमे चिढ़ाता है।
ये नयासाल है बन्धु,
एक मिट्टी का तिलक,
तो ललाट पे आता है।
अपने मन की तरंग को निकालो,

थोड़ी धुम मचालो।
हंस लो गा लो,
इस ब्रम्हाण्ड मे फैलादो।
नव वर्ष की गुंज,
बिधाता तक पहुँचा दो।।
दे रहे आशीष तुझे,
प्राकति तुझे गोद मे खेलायेगा।
कोई और तुझे तेरे वारे मे,
क्या समझायेगा।
जो एक व्यक्ति मे खो गया,
ओ क्या उपरवाला,
को समझ पायेगा।।
पल पल जोड़कर समय बना,
सोच सोच कर मायाजाल।
इस भवर मे सव गिरा,
निकला वही जो जाना आपना हाल।
तो दोस्तो मनाओ नया साल।।
लेखक एवं प्रेषकः- अमर नाथ साहु